विषयगत बहुविकल्पीय प्रश्न : मानविकी क्लस्टर (अंग्रेजी, दर्शनशास्त्र और इतिहास के विद्यार्थियों के लिए)

Year 2024 - Round 1

प्रस्तुत गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और फिर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

भारतीय राजनीतिक जनमत के सभी स्तरों पर रौलट एक्ट के प्रति गहरा आक्रोश था, किंतु अखिल भारतीय स्तर पर इसका सार्वजनिक विरोध करने का एक अनूठा और व्यावहारिक ढंग गांधीजी ने सुझाया। इसमें प्रार्थना-याचना के ढंग को तो छोड़ दिया गया था, किंतु इसका लक्ष्य अनियंत्रित अथवा हिंसक होना नहीं था। आरंभ में योजना पर्याप्त सामान्य थी जिसके अंतर्गत स्वयंसेवक निषिद्ध वस्तुओं की सार्वजनिक रूप से बिक्री करके अपने-आपको गिरफ्तार कराते। बाद में 23 मार्च को गांधीजी ने इसे और बढ़ा दिया। अब इसमें 30 मार्च को अखिल भारतीय स्तर पर हड़ताल करने का नया और कहीं अधिक जुझारू विचार भी सम्मिलित था। (बाद में हड़ताल की तिथि बदलकर 6 अप्रैल कर दी गई।) फिर भी आरंभ से ही काफी नियंत्रण रखा गया था। हड़ताल जान-बूझकर रविवार को रखी गई थी, और गांधीजी ने स्पष्ट कह दिया था कि जिन कर्मचारियों को रविवार को भी कार्य करना पड़ता है वे अपने 'मालिकों से पूर्व अनुमति लेकर ही कार्य बंद करें।' गांधीजी ने आर्यसमाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद का लगान की नाअदायगी के आह्वान का सुझाव भी अस्वीकार कर दिया ("भाई साहब, आप यह तो मानेंगे कि सत्याग्रह के मामले में मैं विशेषज्ञ हूं।"), और दिनशा वाचा जैसे पुराने नरमदलीय नेता से अपना कार्यक्रम स्वीकार कराने के लिए उन्होंने यह तर्क दिया कि "उदीयमान पीढ़ी याचनाओं इत्यादि से संतुष्ट नहीं होगी । मुझे लगता है कि सत्याग्रह ही आतंकवाद को रोकने का एकमात्र उपाय है। (वॉचा को लिखा गया पत्र, 25 फ़रवरी 1919)." सरकार, एस (2021). *मॉडर्न इण्डिया 1885-1947*. राजकमल प्रकाशन. पृष्ठ 207-208.

भारतीय राजनीतिक मत की सभी धाराओं में किसके विरुद्ध नाराज़गी थी?

a) गाँधी
b) रॉलेट एक्ट
c) स्वामी श्रद्धानन्द
d) दिनशॉ वॉचा

गाँधीजी को किस तरह की विरोध योजना तैयार करनी पड़ी?

a) हिंसक विरोध
b) अखिल भारतीय स्तर पर आमजन द्वारा विरोध
c) अंग्रेज़ों को ज्ञापन

d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

राजस्व नहीं देने का आह्वान करने का सुझाव किसने दिया था?

a) दिनशॉ वॉचा
b) स्वामी श्रद्धानन्द
c) पण्डित जवाहरलाल नेहरू
d) भगत सिंह

किसने कहा था, “आप यह तो मानेंगे कि मैं सत्याग्रह के काम में महारत रखता हूँ!”

a) दिनशॉ वॉचा
b) गाँधी
c) दोनों ने कहा था
d) उपर्युक्त में से किसी ने नहीं कहा था

उपर्युक्त गद्यांश में विरोध के किस गाँधीवादी तरीक़े का ज़िक्र नहीं किया गया है?

a) सत्याग्रह
b) हड़ताल
c) भूख हड़ताल
d) विरोध में ज्ञापन लिखना

Year 2024 - Round 2

इस गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और फिर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

बौद्ध धर्म ने ज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में एक नई जागरूकता पैदा की और उसका विकास किया। लोगों को सिखाया कि किसी भी बात को सहजता से स्वीकार मत करो; उसके गुणों पर बहस करो, उसका मूल्यांकन करो। तर्कशीलता ने कुछ हद तक, लोगों के बीच कार्य-कारण को बढ़ावा देते हुए अन्धविश्वास को समाप्त कर दिया। नए धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए, बौद्धों ने एक नए प्रकार के साहित्य को संकलित किया, अपने लेखन द्वारा पाली को भी समृद्ध किया। प्रारम्भिक पाली साहित्य को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। सबसे पहले बुद्ध की बातें और शिक्षा शामिल हैं, दूसरा संघ के सदस्यों द्वारा माने जाने वाले नियमों से सम्बन्धित हैं और तीसरा धम्म के दार्शनिक प्रदर्शन को प्रस्तुत करता है।

ईसाई युग की पहली तीन शताब्दियों में, पाली और संस्कृत के मिश्रण से, बौद्ध ने एक नई भाषा बनाई, जिसे संकर-संस्कृत (हाइब्रिड संस्कृत) कहा जाता है। बौद्ध भिक्षुओं की साहित्यिक गतिविधियाँ मध्य युग में भी जारी रहीं और पूर्व भारत में उनके द्वारा कुछ प्रसिद्ध अपभ्रंश लेखन किए गए। बौद्ध मठ शिक्षा के महान केन्द्र के रूप में विकसित

हुए। बिहार में नालन्दा और विक्रमशिला और गुजरात में वल्लभी का उल्लेख किया जा सकता है।

बौद्ध धर्म ने प्राचीन भारत की कला पर अपना निशान छोड़ा। भारत में पूजा की जाने वाली पहली मानव मूर्तियाँ सम्भवतः बुद्ध की थीं। बुद्ध धर्म के अनुयायियों और भक्तों ने पत्थर में बुद्ध के जीवन के विभिन्न घटनाओं को चित्रित किया। बिहार में बोधगया और मध्य प्रदेश में साँची एवं भरहुत की मूर्ति शृंखला इन्हीं कलात्मक गतिविधियों के उदाहरणों को उजागर करते हैं। पहली शताब्दी के बाद से, गौतम बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण शृंखलाबद्ध रूप से शुरू हो गया। यूनानी और भारतीय शिल्पकारों ने एक साथ मिलकर भारत के उत्तर-पश्चिम सीमाओं पर एक नई कला का सृजन किया जिसे गान्धार कला के रूप में जाना जाता है। इस क्षेत्र में बनाई गई छवियाँ भारतीय और विदेशी प्रभाव दोनों को दर्शाती हैं।

(शर्मा, आरएस (2023) *इण्डियाज़ एन्शिएण्ट पास्ट,* ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 135-36)

बौद्ध धर्म ने किस क्षेत्र में नई जागरूकता उत्पन्न और विकसित की?

a) व्यापार एवं वाणिज्य
b) राजनीति एवं प्रशासन
c) बौद्धिकता एवं संस्कृति
d) समाज सेवा

बौद्धों के लेखन से कौन-सी भाषा समृद्ध हुई?

a) ग्रीक
b) लैटिन
c) तमिल
d) पाली

वर्तमान बिहार राज्य के निम्नलिखित में से किस स्थान पर एक महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठ था?

a) नालन्दा
b) वल्लभी

c) तक्षशिला

d) एलोरा

निम्नलिखित में से कौन-सी जगह बौद्ध स्थल है?

a) साँची

b) बोधगया

c) भरहुत

d) उपर्युक्त सभी

कला का एक रूप जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमान्त में विकसित हुआ और बुद्ध की

कई छवियों में ख़ूबसूरती से व्यक्त हुआ, उसे क्या कहा जाता है?

a) मथुरा कला

b) अमरावती कला

c) गान्धार कला

d) अजन्ता कला

Year 2025 - Round 1

महामारी का युग दिखाता है कि महामारी कहीं भी और कभी भी हो सकती है। जैसा कि हाल ही में इंडोनेशिया में फैली हैजा की महामारी से साबित हुआ है। इस बीमारी में वास्तव में कुछ भी 'भारतीय' नहीं था। और फिर भी, उन्नीसवीं सदी में, यह व्यापक रूप से माना जाता था कि ब्रिटिश भारत हैजा का घर या 'हैजा का कारखाना' है। 1894 में अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता सम्मेलन में एक फ्रांसीसी प्रतिनिधि ने ऐसा कहा था। लेकिन अब हम जानते हैं कि *कोलेरा विब्रियो* कुछ समुद्री पारिस्थितिकी प्रणालियों में पनपता था और कभी-कभी ही मानव आंतों तक पहुँच पाता था। इसी तरह, प्लेग के बारे में कुछ भी 'चीनी' या 'भारतीय' नहीं था, और दुनिया के अन्य हिस्सों में भी *प्लेग* के बड़े स्रोत मौजूद थे। यह एक ऐसी बीमारी थी जिसने मूल रूप से सबसे पहले रोडेंट्स को और फिर मनुष्यों को नुकसान पहुँचाया।

यदि 1889-90 के इन्फ्लूएंजा महामारी को इसके कथित उत्पत्ति के आधार पर 'रूसी फ्लू' करार दिया गया था, तो 1918 की महामारी के लिए अधिक सटीक शब्द 'अमेरिकी फ्लू' होगा। निश्चित रूप से इसका नाम 'स्पेनिश फ्लू' नहीं होगा। वास्तव में, अलग-अलग समय पर, इन्फ्लूएंजा ने अपने सबसे नजदीकी स्रोत के आधार पर कई तरह के नाम हासिल किए। जापान में इसे 'अमेरिकन इन्फ्लूएंजा',

सीलोन में 'बॉम्बे फीवर', डकार (सेनेगल) में 'ब्राजीलियन फ्लू' और उत्तरी रोडेशिया में 'व्हाइट मैन्स फ्लू' कहा जाता था। इस तरह के लेबल हानिरहित लग सकते हैं, लेकिन अतीत में, इसी वजह से बीमारी की उत्पत्ति क्षेत्र से आने वाले प्रवासियों के खिलाफ भेदभाव हुआ है।

इसी कारण से समझदारी दिखाते हुये विश्व स्वास्थ्य संगठन किसी बीमारी के साथ स्थान को नहीं जोड़ता है। कुछ राजनीतिक नेताओं द्वारा COVID-19 के लिए 'चीनी वायरस' लफ्ज़ का प्रयोग अनुचित है। इसका मतलब इस संभावना से इंकार करना नहीं है कि भविष्य में कोई देश जैव रासायनिक हथियारों के माध्यम से जानबूझकर महामारी पैदा कर सकता है। 1930 के दशक में उत्तर-पूर्वी चीन में कुख्यात यूनिट 731 में, जापानी सेना ने हैजा, प्लेग और अन्य बीमारियों के साथ प्रयोग किया था। 1949 में, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान चीन के खिलाफ जैविक हथियारों का इस्तेमाल करने के लिए रूसियों द्वारा कुछ जापानी सैनिकों को दोषी ठहराया गया था। मजे की बात यह है कि यूनिट 731 का आधिकारिक नाम महामारी निवारण और जल आपूर्ति विभाग था। इसके सारे प्रयास तब बहुत बुरे ढंग से विफल हो गए, जब उनके द्वारा फैलाई गई बीमारियों ने उनके अपने सैनिकों को मार डाला।

(चिन्मय तुम्बे, *द एज ऑफ़ पैनडेमिक्स*, 1817-1920: *हाउ दे शेप्ड इंडिया एंड द वर्ल्ड*, हार्पर कॉलिन्स, 2020, पृष्ठ 186-187।)

उपरोक्त अंश के आधार पर, नीचे दिये गए सवालों के जवाब दें:

जापान में इन्फ्लूएंजा को क्या कहा जाता था?

a) अमेरिकी फ्लू
b) श्वेत व्यक्ति का फ्लू
c) पीला फ्लू
d) ब्राजीलियन फ्लू

उन्नीसवीं सदी में, यह व्यापक रूप से माना जाता था कि ब्रिटिश भारत घर है

a) एड्स का
b) तपेदिक (ट्यूबरसीक्लूओसिस) का
c) हैजा का
d) इन्फ्लूएंजा का

चीनियों के खिलाफ जैव रासायनिक हथियारों का उपयोग करने का आरोप किस पर लगाया गया था?

a) अमेरिकी

b) भारतीय

c) जापानी

d) उपरोक्त में से कोई नहीं

कौन सी बीमारी सबसे पहले रोडेंट्स को प्रभावित करती है?

a) मधुमेह

b) प्लेग

c) हैजा

d) उपरोक्त सभी

मंजुला की तीन बेटियाँ और एक बेटा था। बेटियों में से एक अभी-अभी सयानी हुई थी। बाकी दो अभी छोटी थीं। सबसे बड़ी बेटी उनमें सबसे गुणवान थी। उस पर अपनी माँ के स्वभाव की छाया नहीं पड़ी थी। वह अलग थी। इसके पीछे एक और कहानी थी। विठाबाई एक एल्बिनो थी। उसकी कोई संतान नहीं थी और वह एक संतान चाहती थी। इसलिए बचपन से ही उसने मंजुला की सबसे बड़ी बेटी की परवरिश की। उसे अपना ही समझा और हर सुख-सुविधा दी। विठाबाई के घर की साफ़-सफाई, टीमटाम, रहन-सहन का इतना प्रभाव पड़ा कि वह लड़की मंजुला की बेटी बिल्कुल भी नहीं लगती थी। रंग में भी वह अपनी माँ से ज़्यादा गोरी थी। चंदर की भी इच्छा इसी लड़की से शादी करने की थी। बचपन से ही उसने यह सपना मन में पाल लिया था। वैसे विठाबाई की इच्छा भी यही थी। लेकिन वह उसकी सगी माँ तो थी नहीं।

जब लड़की बड़ी हुई, तो मंजुला ने उसपर अपना अधिकार जताया। उसने विठाबाई से अपनी बेटी के लिए दावा किया। उसका इरादा अपनी बेटी की शादी चंदर से करवाने का नहीं था। वह कहती थी, 'उसका अपना कोई घर नहीं है, वह आवारा है।'

तब मैंने पहली बार प्रेम की विनाशकारी ताकत देखी। चंदर कभी चुपचाप बैठने वाला नहीं था। शौचालय के बगल में एक बड़ी खुली जगह थी। वहाँ चाल के सारे लोग कूड़ा-कचरा फेंकते थे। छोटे बच्चे वहीं शौच करते थे। चंदर ने सभी बच्चों को काम पर लगा दिया। कुछ ही दिनों में उसने पूरी जमीन साफ कर दी। एक महीने में उसने इसे एक खूबसूरत बगीचे में बदल दिया। वहाँ गुलाब खिलने लगे। फिर चंदर ने दिवाली की तैयारी की। एक हफ़्ते या उससे ज़्यादा काम किया। उसने अपने दरवाज़े के सामने दीये लगाए। उसने छोटे बल्ब की झालर और कागज़ की झंडियाँ लगाईं। उसने एक मिट्टी का किला भी बनाया। हम सब उसकी कारीगरी के मुरीद थे। लेकिन फिर उसने सुना कि मंजुला की सबसे बड़ी बेटी की सगाई किसी और से हो गई है। इस खबर ने उसे तोड़ दिया। उसने अपने द्वारा की गई सजावट को तहस-नहस कर दिया। एक पागल की तरह उसने उस बगीचे को तबाह कर दिया जो हमारी आँखों को इतना सुकून देता था। उसने झाड़ियों को उखाड़ दिया। कुछ ही मिनटों में उसने इसे फिर से

बंजर भूमि में बदल दिया। यह चंदर का नया रूप था। अन्यथा, वह एक शांतिप्रिय और हंसमुख व्यक्ति था। जो हमेशा अपने रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति की मदद करने को तैयार रहता था।

इसके बाद लंबे समय तक उसने किसी से ज्यादा बात नहीं की। वह अपने मानसिक ज़ख़्मों को भर रहा था। फिर उसने अपना ध्यान मंजुला की दूसरी बेटी की ओर लगाया। वह बहुत छोटी थी, मुश्किल से दस या बारह साल की। लेकिन चंदर ने अगले दो या तीन साल तक इंतजार किया। शायद उसने मन बना लिया था कि वह मंजुला की बेटियों में से ही किसी एक से शादी करेगा। उनमें से किसी एक से - कौन जानता है किससे? लेकिन वह कामयाब हो गया। उसने दूसरी बेटी से शादी कर ली। मंजुला भी नरम पड़ गई थी। उसने इस शादी का कोई ख़ास विरोध नहीं किया।

इस बीच, विठाबाई के जीवन ने एक त्रासद मोड़ ले लिया। जिस बच्ची को उसने अपनी बेटी मान लिया था, उसके बिछड़ाव ने उसे तोड़कर रख दिया। उसके पति की मौत के बाद तो उसके बुरे दिन ही आ गए। उसके पति ने कोई बचत नहीं छोड़ी थी। धीरे-धीरे, फर्नीचर और घरेलू सामान मारवाड़ी की दुकान में जाने लगे। थोड़े समय के बाद ही उसका भरा-पूरा घर खाली-खाली हो गया।
उद्धृत, दया पवार, बलुतं. अंग्रेजी अनुवादक: जैरी पिंटो, पृ. 143-144.

उपरोक्त अंश के आधार पर, नीचे दिये गए सवालों के जवाब दें:

नीचे दिया गया कौन सा विकल्प विठाबाई और मंजुला के बीच के रिश्ते का सबसे अच्छा वर्णन करेगा?

a) विरोधी
b) दोस्ताना
c) उपचारात्मक
d) अस्तित्वहीन

नीचे दिया गया कौन सा विकल्प सही है?

a) लेखक हमें अपने पड़ोसियों के बारे में कहानियाँ सुनाता है, उनकी आजीविका और शिक्षा के बारे में विवरण देता है।
b) लेखक हमें एक परिवार के बारे में बताता है, उनके जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन करता है।
c) लेखक हमें तीन बहनों में से एक से अपनी शादी के बारे में आत्मकथात्मक विवरण प्रदान करता है।
d) लेखक का मुख्य उद्देश्य हमें यह बताना है कि कैसे बेरोजगार पुरुष सुंदर दुल्हनें जीत सकते हैं।

गद्यांश में उल्लेख किया गया है कि विठाबाई का जीवन "त्रासद" हो गया। इनमें से कौन सा इस शब्द के अर्थ को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है?

a) विध्वंसकारी
b) उबाऊ
c) ख़ौफ़नाक
d) अकेला

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A.I.) को लेकर कई आशंकाएँ जताई जाती हैं। उनमें से अधिकतर मानव दिमाग को कम आंकने से जुड़ी हैं। कुछ लोगों को लगता है कि दिमाग एक कंप्यूटर की तरह है। यह सिर्फ़ सूचना प्रोसेसिंग है। हर तरह से यह एल्गोरिदम है। इसलिए ज़ाहिर है कि मशीनें अंततः हमसे आगे निकल जाएँगी।

यह हम मनुष्यों के बारे में एक दरिद्र सोच है... दिमाग अपने आप में ब्रह्मांड है। कभी-कभी मैं तकनीकी लोगों को यह कहते हुए सुनता हूँ कि वे ऐसी मशीनें बना रहे हैं जो लोगों की तरह सोचेंगी। फिर मैं इस महत्वाकांक्षी सोच के बारे में न्यूरोसाइंटिस्ट को बताता हूँ और उनका जवाब होता है: यह एक बढ़िया तरकीब होगी, क्योंकि हम नहीं जानते कि लोग कैसे सोचते हैं।

मानव दिमाग सिर्फ़ वाक्य में अगले शब्द की भविष्यवाणी नहीं कर रहा है। यह बहुत सारे और कामों को करने के लिए विकसित हुआ है। इसमें शामिल हैं- दूसरों से प्यार करना और उनके साथ बंधना, शरीर के जरिये ज्ञान की तलाश करना, प्रकृति के साथ रहना और उसमें मौजूद खतरों से बचना, अच्छाई को जारी रखना, सुंदरता को महसूस करना और उसकी रचना करना, अर्थ को तलाशना और उसे बनाना।

A.I मानव विचार की नकल कर सकता है, क्योंकि यह उन सभी विचारों को ले सकता है जो मनुष्य ने बनाए हैं। यह उन विचारों को शब्दों के धागों में पिरोकर या छवियों को कोलाज में जोड़कर हमारे लिए अर्थपूर्ण बना सकता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि A.I. "दिमाग" मानव दिमाग जैसा है। A.I. "दिमाग" में चेतना, समझ, जीवविज्ञान, आत्म-जागरूकता, भावनाओं, नैतिकता, एजेंसी तथा अलग-अलग और कभी न दोहराए जा सकने वाले अनुभवों पर आधारित अनोखी विश्वदृष्टि का अभाव है।
डेविड ब्रूक्स, "*मेनी पीपल फियर A.I.दे शुड नॉट*" द न्यूयॉर्क टाइम्स, 31 जुलाई 2024।

इस अंश में कुछ शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं:
दरिद्र: खराब या निम्न गुणवत्ता वाला
न्यूरोसाइंटिस्ट: एक वैज्ञानिक जो मस्तिष्क का अध्ययन करता है

नकल: वैसा ही करना

जोड़कर: एक साथ रखकर

इनमें से A.I. और मानव मस्तिष्क के बीच कौन सा अंतर है?

a) सवालों का सही उत्तर देने की क्षमता।
b) दूसरों से प्यार करने की क्षमता।
c) एक वाक्य में अगले शब्द की भविष्यवाणी करने की क्षमता।
d) लोगों के मन को पढ़ने की क्षमता।

नीचे दिया गया कौन सा विकल्प उपरोक्त गद्यांश के नज़रिये का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

a) A.I. मनुष्यों से आगे निकलने जा रहा है।
b) भविष्य में, A.I. में मनुष्यों जैसी सभी क्षमताएँ होंगी।
c) A.I. मनुष्यों की जगह नहीं लेगा क्योंकि मानव दिमाग में ऐसी कई क्षमताएँ हैं जो A.I. में नहीं हैं।
d) A.I. बेकार है क्योंकि यह मानव मस्तिष्क जैसा नहीं है।

A.I. मानव विचारों की नकल कैसे करता है?

a) मनुष्यों जैसी ही भावनाएँ रखकर।
b) मनुष्यों द्वारा उत्पादित विचारों को लेकर और उन्हें ऐसे तरीकों से जोड़कर जो समझ में आएँ।
c) यह समझकर कि मनुष्य कैसे सोचते हैं।
d) प्रकृति के बीच नेविगेट करके और खतरे से बचना सीखकर।

Year 2025 - Round 2

अगर हम क्रोध के बारे में गहराई से सोचें, तो आसानी से समझ सकते हैं कि यह जीवन जीने का एक मूर्खतापूर्ण तरीका क्यों है। इसे समझने की शुरुआत हम अरस्तू के विचारों के जरिये कर सकते हैं। क्रोध के बारे में अरस्तू के विचार मुकम्मल तो नहीं लेकिन काफ़ी उपयोगी हैं। साथ ही ये पश्चिम की लंबी चिंतन परंपरा के शुरुआती बिंदु हैं। अरस्तू का कहना है कि क्रोध, किसी वस्तु या किसी व्यक्ति को पहुँचाए गए नुकसान की प्रतिक्रिया है। इसमें क्रोधित व्यक्ति को लगता है कि उसे बेवजह नुकसान पहुँचाया गया है या दुख-दर्द से गुज़रने के लिए मजबूर किया गया। उन्होंने आगे कहा कि “क्रोध भले

ही बड़ा दुखदायी हो, लेकिन इसमें बदले की भावना भी निहित होती ही है।" इसका मतलब है कि व्यक्ति के मूल्यों और विचारों का कोई बड़ा नुकसान और गलतियाँ क्रोध में मौजूद होती हैं। यह सब कुछ सही और जरा भी विवादास्पद नहीं लगता है। उसका ज्यादा विवादास्पद विचार यह है कि क्रोधित व्यक्ति बदला लेना चाहता है... दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, अगर कोई बदला नहीं लेना चाहता है, तो उसकी भावना को क्रोध नहीं, बल्कि कुछ और (शायद शोक) कहा जाएगा।

इसमें समझने वाली बात यह है कि 'जैसे को तैसा' वाली बात का कोई मतलब नहीं होता है। आपके साथ जो कुछ भी गलत हुआ हो, गलत करने वाले को उसी तरह के दुख-दर्द से गुज़रने पर मजबूर करने से बिगड़ी हुई चीज़ों ठीक करने में कोई मदद नहीं मिलती है। बदले की भावना भले ही मनुष्यों के भीतर गहराई तक धंसी हुई हो, लेकिन दुनिया को समझने के तरीके के रूप में यह ख़तरनाक रूप से गलत है।

(स्रोत: Martha Nussbaum, "Beyond Anger" Aeon, 26 July 2016 से अनुदित)

ऊपर दिए गए परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अरस्तू की क्रोध की परिभाषा का कौन-सा हिस्सा विवादास्पद है?

a) क्रोध किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु को नुकसान पहुंचाने की प्रतिक्रिया है।
b) क्रोध किसी के द्वारा गलत तरीके से जानबूझकर दुख देने की प्रतिक्रिया है।
c) क्रोध में बदले की उम्मीद होती है।
d) क्रोध जीवन जीने का मूर्खतापूर्ण तरीका है।

निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प क्रोध को जन्म देने वाले नुकसान के बारे में अरस्तू के दृष्टिकोण का हिस्सा **नहीं** है?

a) नुकसान की भरपाई नहीं की जा सकती है।
b) नुकसान काफ़ी बड़ा होता है।
c) नुकसान को गलत काम या अन्याय माना जाता है।
d) किसी की प्यारी वस्तु या व्यक्ति को दुख पहुँचाने के लिए नुकसान किया जाता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प इस परिच्छेद में क्रोध के बारे में बताए गए विचारों को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त करता है?

a) क्रोध ख़तरनाक होता है।
b) क्रोध उचित ही होता है।

c) क्रोध निरर्थक होता है।

d) क्रोध बहादुरी पूर्ण होता है।

बदला लेने का विचार ख़तरनाक रूप से गलत क्यों है?

a) बदले से हिंसा हो सकती है।

b) बदले से अन्यायपूर्ण कामों से किए गए नुकसान को ठीक नहीं किया जा सकता है।

c) बदले से दूसरों का बड़ा नुकसान हो सकता है।

d) बदले की भावना से दुख ही दुख फैल सकता है।

राजराजा के शाही मंदिरों में प्रतिदिन के अनुष्ठान करने और मंदिर साफ़-सुथरा व सुंदर बनाए रखने के लिए बहुत से कर्मचारियों की ज़रूरत होती थी। शिलालेखों में 850 मंदिर कर्मचारियों की सूची दी गई है, जिनमें से 400 नर्तकियां और 67 संगीतकार थे। ये नर्तकियाँ राजराज के साम्राज्य में फैले कई छोटे-छोटे मंदिरों से तंजावुर लाई गई थीं। ये नर्तकियाँ मंदिर से सटी दो गलियों में बने अपने-अपने घरों में रहा करती थीं। इनमें से हर एक को धान की खेती करने के लिए एक 'वेली' (लगभग 5 एकड़) ज़मीन दी गई थी। इतनी ज़मीन उनको अपना जीवन आराम से बिताने के लिए काफ़ी थी। अभिलेखों से पता चलता है कि यह पेशा पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनाया जाता था। मंदिर की नर्तकियाँ काव्य, संगीत, नृत्य, नाटक और चित्रकला में माहिर होती थीं। इन नर्तकियों को दिन के अलग-अलग समय पर मंदिर के गर्भगृह के सामने बने मुख्य हॉल में नृत्य करने के लिए बुलाया जाता था। यह नृत्य भगवान शिव के सम्मान में हुआ करता था। बीसवीं सदी तक आते-आते इनमें से कुछ ही नर्तकियाँ रह गई थीं। इन आख़िरी बची हुई नर्तकियों के साक्षात्कारों से हमें उनकी हैसियत और सम्मान के बारे में पता चलता है। इन नर्तकियों के नृत्य के बिना भगवान की पूजा अधूरी और रसहीन मानी जाती थी।

इस विशाल धार्मिक परिसर को चलाने के लिए बड़ी संख्या में कर्मचारियों की ज़रूरत होती थी। इन कर्मचारियों में 174 पुजारी, 143 चौकीदार, कोषाध्यक्ष, लेखाकार, ज्योतिषी, दीपदाता, जल छिड़कने वाले, कुम्हार, दर्जी, बढ़ई, सुनार और मूल्यवान पत्थरों की जाँच-पड़ताल करने वाले जैसे कुशल लोग शामिल थे। इन कर्मचारियों का समन्वय मंदिर प्रबंधक किया करते थे, उन्हें मुख्य अदित्तन सूर्यन कहा जाता था। राजराजा ने इन मंदिरों को ज़रूरत के मुताबिक धन मुहैया कराने के लिए कुछ ख़ास इंतज़ाम भी किए थे। उन्होंने कई गाँवों को देवता को दान के रूप में दे दिया था। अनुष्ठान में अर्पण करने या चढ़ावे के लिए आवश्यक सामग्री और खाद्य सामग्री की आपूर्ति करने की ज़िम्मेदारी इन गाँवों की हुआ करती थी। मंदिर में चढ़ाए जाने वाले प्रसाद में चावल और दही शामिल हुआ करते थे। ये दक्षिण (भारत) में आज भी खाए जाने वाले भोजन के समान हुआ करता था। गाँव के चरवाहों को कुछ पालतू पशु दिए जाते थे। इन पशुओं से मिलने वाले दूध से मंदिर को हर रोज़ मक्खन और घी की आपूर्ति

की जाती थी। इस घी का इस्तेमाल शाम को मंदिर को प्रकाशित करने वाले 158 दीपकों में किया जाता था। इन शिलालेखों से हमें यह भी पता चलता है कि देवता के अनुष्ठानिक स्नान के लिए हर दिन सुगंधित इलायची के बीज और सुगंधित खस की जड़ उपलब्ध कराने के लिए भी अलग से धन का प्रावधान था।

(विद्या दहेजिया की पुस्तक, *Indian Art,* Phaidon 1992., pp. 221-222 से अनुदित)

उपरोक्त परिच्छेद के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राजराजा के शाही मंदिर में निम्निलिखित में से कौन-से कर्मचारी थे?

a) ललारी
b) खानसामा
c) बढ़ई
d) सैनिक

इस परिच्छेद में मंदिर और उसके आसपास की दिनचर्या को बताया गया है, यह जानकारी लेखिका को कहाँ से मिली?

a) शिलालेख और साक्षात्कार से
b) ग्रंथ और कथाओं से
c) संगम साहित्य और नृत्य से
d) ताड़पत्र पर लिखी पाण्डुलिपियों और सिक्कों से

राजराजा ने शाही मंदिर को यथायोग्य धन आपूर्ति के लिए क्या प्रबंध किया था?

a) उन्होंने पूरा गाँव मंदिर को दान दे दिया था
b) उन्होंने मंदिर को कई कर्मचारी उपलब्ध कराए थे
c) उन्होंने नए क्षेत्र जीतकर मंदिर को दान कर दिए थे
d) वे मंदिरों के लिए लूट का माल लाने के लिए लंबी समुद्री यात्राओं पर गए

मैंने यह अध्याय 2020 के मार्च की शुरुआत में लिखना शुरु किया था। इसी समय अचानक कोरोना वायरस हमारी दुनिया के लिए सबसे बड़ा ख़तरा बनकर बड़ी तेज़ी से उभर चुका था। इस ख़तरे से बचना लगभग नामुमकिन हो गया था। ब्रुकलिन की सड़कों पर न तो कारें रह गई थी और न इंसान का नामोनिशान बचा था। ऐसा लग रहा था कि सब कुछ टूट चुका है, सब कुछ बिखर चुका है, सब

कुछ कहीं पीछे छूट चुका है। 2016 में मैं बांडा द्वीप पर गया था। वहाँ के सफ़र के नोट्स पढ़ते हुए मुझे कभी-कभी ऐसा अजीब-सा महसूस होता, जैसे कि मैं गायब होकर उस द्वीप पर पहुँच गया हूँ।

इस सफ़र के दौरान अबूकर अल अल्वी ने मुझे अमेरिकी इतिहासकार विलार्ड हन्ना की किताब '*Indonesian Banda: Colonialism and Its Aftermath in the Nutmeg Islands*' पढ़ने के लिए दी। इसी किताब में मैंने पहली बार 21 अप्रैल, 1621 को सेलामोन में गिरे दीपक के बारे में पढ़ा था।

इसके चलताऊ विवरण ने ही मुझे परेशान कर दिया था। इतनी साधारण, रोज़मर्रा की दुर्घटना ने डच सैनिकों की टुकड़ी में इतनी दहशत क्यों पैदा कर दी?

ब्रुकलिन की उन रातों का सन्नाटा सिर्फ़ एम्बुलेंस के सायरन की आवाज़ों से टूटता था। इसलिए यह कल्पना करना संभव था कि एक अचानक और अप्रत्याशित आवाज़ सभी को हमारे चारों ओर मौजूद अदृश्य अमानवीय उपस्थितियों की याद दिला सकती है। ये आवाज़ें हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस तरह दख़लअंदाज़ी करती हैं कि आम घटनाओं के मतलब ही बदल जाते हैं।

अस्पताल के बाहर रेफ्रिजरेटेड ट्रको में लाशें रखी हुई थीं। सड़कों पर बस डर का माहौल था। अचानक आवाजाही बंद हो जाने से ऐसा लग रहा था मानों हमारी साँसें फूल रही हों। अगर लॉकडाउन जैसे अजीबोगरीब हालात नहीं होते, तो मैं उस समय का आँखों देखा हाल जानने के लिए इंटरनेट पर शायद ही खोजबीन करता। मुझे आश्चर्य हुआ कि एक पीडीएफ़ फ़ाइल मिल गई! यह जा वैन डेर चिज्स द्वारा लिखित लेख था। यह लेख किसी रहस्यों के ख़ज़ाने से कम नहीं था। मैंने इसे ऐसे देखा जैसे यह कोई पत्थर या पेट्रोग्लिफ पर कुछ उत्कीर्ण किया गया (शिलालेख) हो।

कोविड के दौरान रोज़ शाम 7 बजे ताली बजाना, जयकारे लगाना और बर्तन पीटना एक रस्म बनी गई थी। एक दिन इसी रस्म की शुरुआत का इंतज़ार करते हुए मैं एक किताब के पन्ने उलट रहा था। इसी दौरान मुझे कुछ जाने-पहचाने शब्द मिले। मैंने पाया कि 'लैंप' शब्द का अंग्रेज़ी और डच भाषाओं में एक ही अर्थ है। मैंने उत्तेजना में एक डच वाक्य किसी अनुवाद करने वाले ऐप में टाइप किया। मैं यह देखकर हैरान हुआ कि मेरे सामने ऐसे कुछ शब्द आए, जिनका आपस में जुड़कर एक भरा-पूरा अर्थ निकल रहा था। वे अर्थपूर्ण वाक्य बना रहे थे, जिसमें कहा गया था: "21 और 22 अप्रैल 1621 की लगभग आधी रात का समय था। बेल-बेल में सोनक और उसके सलाहकार आराम की नींद सो रहे थे। वहीं एक दीपक गिर गया। यह एक मामूली घटना थी, लेकिन यूरोपीय लोगों में दहशत पैदा करने के लिए काफ़ी थी, जो हर जगह विद्रोह का सामना कर रहे थे।"

मैंने ऐप में और भी वाक्य टाइप किए। मैंने ऐप में और वाक्य डालने शुरू कर दिए। इनमें से लगभग सभी नतीजे अस्पष्ट थे। इन नतीजों के पीछे बस इतनी-सी झलक थी कि मैं पाठ के भीतर और भी गहराई से उतर गया। इसलिए, जब मेरी खिड़की के पास से तेज़ सायरन बजाती हुई एम्बुलेंसें गुजरीं, तो मैंने पूरे पन्ने टाइप कर दिए। जल्द ही मुझे लगने लगा कि इंटरनेट और कोरोनावायरस दोनों

इंसानों के ख़िलाफ़ हाथ मिलाकर खड़े हैं। मुझे ऐसा लगा, जैसे इंटरनेट और कोरोनावायरस साथ में मिलकर इस दुनिया को एक भूतिया पोर्टल बना रहे हैं। जो मुझे लंबे समय से मृत डचमैन की आत्मा के जरिये बांडा द्वीप की 21 अप्रैल 1621 की रात ले गया।

(अमिताव घोष की पुस्तक *The Nutmeg's Curse* से संकलित और अनुदित)

"मैंने उत्तेजना में एक डच वाक्य किसी अनुवाद करने वाले ऐप में टाइप किया।" यहाँ 'उत्तेजना' शब्द का क्या अर्थ निकलता है?

a) लेखक को आत्म-संयम नहीं है।
b) ऐप का इस्तेमाल करने का कोई इरादा नहीं था।
c) ऐसा ऐप तभी काम करता है, जब आप इसका अनियमित इस्तेमाल करते हैं।
d) ऐप का इस्तेमाल खाली समय में ही किया जा सकता है।

इस परिच्छेद में कोविड-19 की क्या भूमिका है?

a) इसका विषय से कोई संबंध नहीं है, सिर्फ़ हँसी-मज़ाक के लिए इसे जोड़ा गया है।
b) यह न्यूमर्ग द्वीपों के एक बड़े विषय का एक छोटा-सा हिस्सा है।
c) यह विषय को आगे बढ़ाने के लिए साथ आए हुए दो कारकों में से एक है।
d) यह इस परिच्छेद का मुख्य विषय है।

इस परिच्छेद में इतिहासकार विलार्ड हन्ना का क्या महत्व है?

a) उनका लेखन जानकारी का मूल स्रोत है और शोधार्थी के लिए काफ़ी महत्त्वपूर्ण है।
b) हन्ना एक लोकप्रिय इतिहासकार हैं और बांदा द्वीप की विशेषज्ञ हैं।
c) विलार्ड हन्ना इस लेखक की मित्र हैं।
d) विलार्ड हन्ना की किताब पढ़ने के बाद लेखक की इस घटना